मुक्त शैक्षिक संसाधन
(दूसरा खण्ड)

विषय : हिन्दी[3] **कक्षा : सातवीं**

कार्यशाला में शामिल व्यक्तिगण :

1. डॉ. अंजलि काकति : वरिष्ठ व्याख्याता, हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उत्तर गुवाहाटी
2. शुवला दत्त शइकीया, उप निदेशक, एस. सी. ई. आर. टी. असम

सम्पादन :

1. डॉ. अंजलि काकति

ग्रुप-लीडर :

शुवला दत्त शइकीया, उप निदेशक, एस. सी. ई.आर. टी. असम

पुनरीक्षण : डॉ. अच्चुत शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यलय।

अलंकरण : डॉ. अंजलि काकति
शुवला दत्त शइकीया

डी.टी.पी. : श्री सुरेन रामसियारी

समन्वयक :
मुजाफर आली, (कनसालटेन्ट)

अधिगम के परिणाम के कमजोर क्षेत्रों के सुधार हेतु प्रस्तुत मुक्त शैक्षिक संसाधन

कक्षा- सातवीं **विषय : हिन्दी[3]**

विगत गुणोत्सव के दौरान विद्यार्थियों में कविता /गीत के पठन /गायन, लेखन और सस्वर पाठ या आवृत्ति के संदर्भ में कमी पायी गयी। इस कमी के दूरीकरण हेतु यह संसाधन-इकाई प्रस्तुत है।

अधिगम के परिणाम :

⇨ प्रस्तुत संसाधन-इकाई के अधिगम से हमें हिन्दी की कविता और गीत-जैसी आकर्षक पद्य विधाओं की सम्यक जानकारी प्राप्त होगी।

⇨ कविता एवं गीत किस प्रकार सही उच्चारण, लय, उतार-चढ़ाव एवं हाव-भाव के साथ पढ़े तथा गाये जाएँ, सूक्ष्म भाव एवं विचार के साथ कविता एवं गीत कैसे रचे जाएँ, प्रभावकारी ढंग से कविता का सस्वर पाठ कैसे किया जाए इत्यादि बातों का समुचित ज्ञान हम लोगों को इस संसाधन-इकाई के सही अनुधावन से मिल जाएगा।

अधिगम के परिणाम के उप-क्षेत्र :

⇨ इस संसाधन-इकाई के जरिए कविता और गीत के पठन, गायन, सस्वर पाठ और लेखन के सम्यक ज्ञान की प्राप्ति के अलावा इस सर्जनात्मक कला से जुड़ा हुआ रस अथवा आनन्द भी मिलेगा।

⇨ इस संसाधन-इकाई के द्वारा व्यंग्यात्मक शैली में रचित कविता का आनन्द प्राप्त होगा।

⇨ संदर्भित कविता के द्वारा भाषा-अध्ययन की दृष्टि से विशेषण, पर्यायवाची शब्द आदि की जानकारी भी हमें प्राप्त होगी।

संदर्भ पाठ:

पाठ-तेरहवाँ- 'भगतिन मौसी' (कविता)

महीना :- सितम्बर

प्रस्तावना : उच्च प्राथमिक कक्षा में अहिन्दी भाषी विद्यार्थियों को अच्छी तरह से हिन्दी सिखाने के लिये तीसरी भाषा हिन्दी का महत्व है। इस पर ध्यान रखते हुए छठी कक्षा से आठवीं कक्षा तक तीसरी भाषा हिन्दी का स्थान बहुत जरूरी है। इसलिए सरकारी त्रि-भाषा सूत्र के अनुसार तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी का पठन-पाठन होता है। वस्तुत: इस मुक्त अधिगम संसाधन (हिन्दी) की प्रस्तुति के पीछे शिक्षा अधिकार अधिनियम-2009 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या नीति 2005 तथा असम सरकार द्वारा आयोजित विगत गुणोत्सव के परिणाम का आधार है।

विधाता की अनुपम सृष्टि की तरह ही कविता कवि की अतुलनीय सृष्टि है। भाव, कल्पना, विचार और शैली इन चार तत्वों के सुसमन्वय से कविता को अत्यंत आकर्षक स्वरूप प्राप्त होता है। गीत, काव्य, पद, भजन, शेर, शायरी, गजल आदि विविध रूपों में कवि के अलावा पाठक-श्रोताओं के साथ कविता का साहचर्य बराबर बना रहता है। कविता की रचना करना, उसे सुनाना, समझना आदि सभी कार्य आनन्ददायक एवं रोमांचपूर्ण होते हैं। कविता का पठन-पाठन, उसका सफल शिक्षण

आनन्दपूर्ण वातावरण की माँग करता है। कविता एवं गीत में मूलतः सूक्ष्म भाव, आवेग तथा अनुभुति की अभिव्यक्ति होती है। प्रकृति जगत के विविध उपकरणों, जैसे सूरज, चाँद, तारे, आकाश, धरती, हवा, फूल, पौधे, तितली, पशु-पक्षी आदि को कविता एवं गीत का हिस्सा बना लिया जाता है। इसमें हमारी संस्कृति, एकता, देश प्रेम आदि के संदेश भी शामिल होते हैं। हमें इस पर ध्यान देने की जरूरत है कि कविता और गीत किस प्रकार पढ़े और गाये जाते हैं, कविता और गीत किस प्रकार से रचे जाते हैं और सस्वर वाचन कैसे किया जाता हैं। इन्हीं बातों को इस संसाधन इकाई में 'भगतिन मौसी' शीर्षक कविता के सन्दर्भ में आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई को सीखने-सिखाने का महत्व :

पद्य /कविता, गीत, बालगीत, प्रार्थना, आदि हिन्दी साहित्य की उल्लेखनीय विधाएँ हैं। कविता को सुन्दर व रोचक बनाने के लिए उसमें रस तथा अलंकार का प्रयोग जरूरी है। इसके साथ-साथ छंद, लय, उच्चारण आदि का भी खास महत्व होता है। इसलिए इस बात पर ध्यान रखना जरूरी है कि पढ़ते समय विद्यार्थी को मनोरंजन भी मिले। इससे विद्यार्थियों की कल्पना शक्ति और सौन्दर्य-बोध का विकास होता है। कविता, गीत, आदि के पठन-पाठन में अपूर्व आनन्द की अनुभूति प्राप्त होती है। साथ ही साथ निरीक्षण के जरिए प्राप्त अनुभव के आधार पर सृजनात्मक योग्यता अपनाने के लिए उत्साह मिलता हैं। इस प्रकार प्रस्तुत इकाई का महत्व अपरिसीम है।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई से हम क्या-क्या सीख पायेंगे ?

- ⇨ हिन्दी में कविता, गीत, बालगीत के जरिए प्राक पठन कौशल के रूप में पद्य पढ़ने या गाने की समर्थता प्राप्त होगी।
- ⇨ गीत, कविता आदि सुनकर सस्वर वाचन के अलावा लेखन-सामर्थ्य का भी विकास होगा।
- ⇨ हिन्दी में ध्वनि, वर्ण, शब्द, वाक्य आदि के सही प्रयोग सम्बंधी क्षमता प्राप्त होगी।
- ⇨ विद्यार्थियों को हिन्दी में सहज-सरल कविता, बालगीत आदि शुद्ध उच्चारण सहित पढ़ सकते की योग्यता प्राप्त होगी।
- ⇨ विपरीतार्थक और पर्यायवाची शब्दों का सामान्य ज्ञान प्राप्त होगा।

<u>प्रस्तुत संसाधन-इकाई के लिए शिक्षक क्या-क्या करेंगे</u> ? (परिकल्पना) :

- ⇨ शिक्षक कविता-शिक्षण में कविता को सुन्दर व रूचक बनाने के लिए विद्यार्थियों के सामने गीत या कविता सस्वर पढ़ने के साथ-साथ शुद्ध उच्चारण और लय, प्रवाह और हाव-भाव के साथ उसका गायन या आवृति करेंगे।

1. कविता को हाव-भाव, अभिनय, लय, ताल के साथ गाएँ तथा बच्चों से गवाएँ।

2. कविता की प्रत्येक पंक्ति बोलें बच्चों से दोहराने को कहें।

3. कविता बच्चों को कंठस्थ करवाएँ। कंठस्थ होने पर पंक्तियाँ पूरी करने का खेल भी करवाएँ।

4. बच्चों से कविता पढ़ने व लिखने का भी अभ्यास करवाएँ।

5. कविता में एकसाथ दो बार आनेवाले शब्दों पर पेंसिल से गोला लगवाएँ।

6. कविता में से समान तुकवाले शब्दों को छाँट कर पढ़ने-लिखने तथा इनके जैसे और शब्द बनाने को प्रेरित करें।

7. कुछ कविताओं में कहानी हो सकती है या किसी घटना का विवरण हो सकता है। बच्चों को वह

कहानी अथवा घटना सरल शब्दों में सुनाने को प्रेरित करें।

8. उच्चारण एवं लेखन की दृष्टि से कठिन शब्दों को सही बोलने एवं लिखने का अभ्यास करवाएँ।

9. इनके अतिरिक्त पाठ के साथ दिए हुए अन्य अभ्यासों को भी करवाएँ।

⇨ विद्यार्थियों से भी उस पठित या अपठित गीत/कविता का सुन्दर रूप से वाचन, गायन और आवृत्ति करायेंगे।

⇨ अध्यापक कविता/गीत का पठन अंग-भंगिमाओं साथ करेंगे। विद्यार्थी भी वैसा ही करेंगे।

⇨ कविता/गीत लेखन का भी अभ्यास करायेंगे। इसमें से अनुभव के आधार पर सृजनात्मक योग्यता का विकास होगा।

⇨ गीत-कविता के प्रति विद्यार्थियों की रुचि और आग्रह पैदा करने के लिए अध्यापक जरूरी प्रतियोगिताओं का भी आयोजन करेंगे। उन्हें पुरस्कृत कर प्रोत्साहित करेंगे।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई के लिए आवश्यक शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ :

क्रिया-कलाप-1: शिक्षक क्या करेंगे ?

अभिप्रेरण :

शिक्षक-शिक्षिकाओं को एक बात पर ध्यान रखना होगा कि कविता/गीत और पद्य पढ़ाते समय विद्यार्थियों को आनन्द और मनोरंजन भी मिले। उनकी रुचि की जानकारी हेतु उनके पूर्वज्ञान की परीक्षा भी जरूरी हो जाती है। शिक्षक उनके उपयोगी दूसरे हास्य और व्यंग्यात्मक विषय पर या अन्य मनोरंजक विषयों पर लिखी हुई एक-दो कविता गाकर या निम्नलिखित प्रश्नों के सहारे उनके पूर्वज्ञान की परीक्षा लेंगे। जैसे :-

प्रश्न-**1** बच्चो, जंगल के बारे में तुम लोगों को मालुम है ?

उत्तर:- हाँ जी।

प्रश्न-**2** क्या जानवर तुमलोगों को पसंद हैं ?

उत्तर:- हाँ। बहुत पसंद हैं।

प्रश्न-**3** जंगलों में कितने प्रकार के जानवर मिलते हैं ?

उत्तर:- जंगलों में विभिन्न प्रकार के जानवर मिलते हैं ?

प्रश्न-**4** जंगल को और किस नाम से जाना जाता है ?

उत्तर:- अरण्य, अभयारण्य इत्यादि।

प्रश्न-**5** बन्दर किस प्रकार का जानवर है ?

उत्तर:- बन्दर एक अजीब सा जानवर है।

इस तरह विद्यार्थियों से जंगल या जानवर के ऊपर सम्यक ज्ञान के बारे में शिक्षक जान लेंगे। तभी आप गीत, कविता, पद्य के लिए आगे बढ़ेंगे। इसके लिए शिक्षक अरण्य या जंगल और अन्य जीव-जन्तु आदि के चित्रों का भी सहारा लेंगे।

क्रिया-कलाप-2

कविता का छंद, लय, सुर, तुक में पठन /श्रवण और इस का सस्वर वाचन :

शिक्षक कक्षा में पहले पाठ्य-पुस्तक को विद्यार्थियों के सामने रखने के लिए कहेंगे। बाद में उल्लिखित कविता को लेकर कविता के बारे में पूर्वज्ञान की जानकारी के लिए खुद प्रश्न पूछेंगे और विद्यार्थियों को बाद में शुद्ध उच्चारण, लय के साथ कविता का सस्वर वाचन करायेंगे। जैसे-

चंदन तिलक लगाकर ओढ़ा
राम नाम का शाल।
कंठी पहने आई बिल्ली
लेकर-तुलसी-माल।
बोली- ''चूहो, मैं जाऊँगी
करने तीरथ धाम।
आकर चरन छूओ मौसी के
झुककर करो प्रणाम।

इस तरह कविता को पढ़कर, सुनकर उसके भाव तथा रस से परिचित करायेंगे। विद्यार्थी पठन के जरिए अनुभव के आधार पर उत्साहित होंगे। कविता बच्चों को कंठश्थ करवाएंगे। कंठश्थर के साथ-साथ शुद्ध उच्चारण और लय के साथ विद्यार्थियों को भी वाचन करायेंगे। स्वयम द्वारा या फिर बच्चों को दलों में विभाजित करके उनमें से एक-एक के द्वारा यह कार्य संपन्न करेंगे। शिक्षक विद्यार्थियों के वाचन में की गयी गलतियों को सुधारने के लिए प्रयास करेंगे।

अध्यापक ध्यान देंगे :-

सभी विद्यार्थियों ने कविता के पठन-पाठन में एकाग्रता से भाग लिया है या नहीं ?

शिक्षक-शिक्षिकाओं को इस बात पर ध्यान रखना होगा कि कविता को पढ़ाते समय विद्यार्थियों में मनोरंजन के साथ-साथ कल्पना शक्ति और सौन्दर्यबोध का विकास हो। इसके साथ कठिन शब्दों के अर्थ लिखवाकर पढ़ने-लिखने का अभ्यास करवाए।

शब्द	**अर्थ**
तीरथधाम	तीर्थस्थान
चरण	पैर, पाँव
सार	सारांश
छूना	श्पर्श करना
बिल	चूहों के रहने का स्थान

क्रिया-कलाप-3

(सही रूप से अपनी वाक्य-संरचना, शब्दों की स्थिति एवं आंतरिक्त लय तथा सुर के साथ हिन्दी में कविता/पद्य पढ़ना/आवृत्ति करना)

क्षेत्र अध्ययन-1

कविता एक कला है, जो कल्पना की सहायता से विवेक द्वारा सत्य और आनन्द का संयोजन करती है। कविता में शोभित शब्द और अर्थ के समन्वय पर बल दिया जाता है।

इसलिये सातवीं कक्षा के विद्यार्थियों में कविता का पठन-पाठन उसका सफल शिक्षण आनंदपूर्ण वातावरण की मांग करता है। सही उच्चारण, लय के साथ पठन या आवृत्ति शक्ति का विकास करने के लिए प्रयन्न करना होता है। इसलिए पश्चिम ढकुवाखना सरकारी बालिका विद्यालय की हिन्दी शिक्षिका श्रीमती कुंजलता फुकन ने एक उत्तम तरीका अपनाया है और इसी का वर्णन नीचे प्रस्तुत है :-

कुंजलता जी ने कक्षा में विद्यार्थियों को किसी एक मनोरंजक कविता का संग्रह करने के लिए निर्देश दिया। उन्होंने सहपाठी और जानकार व्यक्ति के सहारे कई दिनों तक उसका सही उच्चारण तथा लय और अंग-भंगिमा के साथ तैयारी करने हेतु भी निर्देश दिये।

दस दिन के बाद शिक्षिका ने उनकी चुनी हुई कविताएँ लीं और उनमें एक व्यंग्यात्मक कविता पठन/ आवृत्ति की प्रतियोगिता रखी, ताकि ली गयी कविताओं में निहित भावानुभूति, कल्पना, विचार और अभिव्यक्ति की भंगिमा के साथ विद्यार्थियों की भावना एवं प्रवृत्ति का ताल-मेल बिठाकर यह काम सुगमता-पूर्वक कर सके। सावधानी के साथ किये गये गहन प्रयासों से वातावरण को अनुकूल बनाये रखकर चर्चित कविता से समुचित आवृत्ति कौशल प्राप्त करने-कराने में अवश्य ही सफलता मिल सकती है। इस प्रतियोगिता में पुरस्कार की भी व्यवस्था रखी गई। उत्साहित सभी विद्यार्थियों ने अपनी कविता का पठन, आवृत्ति सही उच्चारण, लय और अंग-भंगिमाओं के साथ किया। स्कूल के शिक्षकगण ने वाह-वाह ही दी। इसके जरिए विद्यार्थियों पर एक आनन्दपूर्ण और योगात्मक प्रभाव देखा गया। दक्षताओं के विकास के लिए विषय-वस्तु अधिक से अधिक रोचक हो तो बच्चे रुचि लेकर सहजता से सीखते हैं।

आएँ मिलकर सोचें :

⇨ कुंजलता फुकन ने कविता/पद्य/गीत पठन के प्रति विद्यार्थियों की रुचि को कैसे पहचाना और उनके पठन/वाचन कौशल के विकास के लिये उन्होंने कौन-सा तरीका अपनाया?

⇨ क्यों कविता-पठन को सिखाने हेतु उन्होंने विद्यार्थियों के लिए प्रतियोगिता को उचित समझा?

⇨ कविता का सफल शिक्षण और आनन्दपूर्ण वातावरण कैसे बना?

क्षेत्र अध्ययन-2

नलबारी जिले के एक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के हिन्दी शिक्षक भोला चेतिया जी ने कक्षा सातवीं के विद्यार्थियों की दक्षता और मानसिक शक्ति के विकास करवाने के लिए कौन-सा उपाय किया उसका वर्णन उन्हीं के शब्दों में नीचे प्रस्तुत है:

सबसे पहले मैंने बच्चों से जंगल में पाये जानेवाले जीव-जन्तु, उनके रंग, आकृति और भोजन के बारे में पूछा। उनके उत्तर आये ऐसे- बाघ, भालू, बन्दर, सियार आदि। अब इन पर उनकी समझ और सामर्थ्य के अनुसार कविता लिखने को कहा और मैंने भी एक कविता उदाहरण के लिए दी। जैसे-

दबे पाँव से बिल्ली आई,
लगी चाटने दूध-मलाई
गरम लगा तो जुगत भिड़ाई,
पटके बरतन धूम मचाई।
कुत्ते ने जो आहट पाई,
दौड़ के झटपट पहुँचा भाई
भौं-भौं कर आवाज लगाई,
मुनिया झट से दौड़ी आई।

इस तरह से मैंने उनकी रुचि पर ध्यान दिया और एक छोटी-सी मनोरंजक कविता लिख दी। फिर अपने प्रयास और बड़ों के सहयोग से उन्हें किसी भी विषय पर कविता लिखने के लिए मैंने निर्देश दिया और मुझे दिखाने के लिए भी कहा। विद्यार्थियों ने ऐसा ही किया। मैंने भी यथावश्यक और यथासंम्भव इसमें उनकी सहायता की।

आइए, हम सब सोचें :

⇨ शिक्षक ने कैसे अपने विद्यार्थियों का लेखन के प्रति ध्यान-आकर्षण कराया?

⇨ क्या विद्यार्थियों ने अपने अन्दर छिपी हुई सृजनात्मकता के विकास के लिए चेष्टा की?

⇨ उनके के स्थान पर आप होते, तो क्या करते?

क्रिया-कलाप-4

(प्रश्नाभ्यास और विशेषण के बारे में जान लें।)

प्रस्तुत पाठ के अनुशीलन के सहारे व्यांग्यात्मक कविता संबंधी ज्ञान देने का प्रयास किया गया है। जैसे-

1. बिल्ली ने राम नाम का शाल क्यों ओढ़ा था?

2. 'चूहो, मैं जाऊँगी करने तीरथ धाम'- क्या बिल्ली सचमुच तीर्थ-यात्रा पर जाने वाली थी?

3. 'चली न उसकी चाल'- यहाँ किसकी कौन-सी चाल की बात की गई है?

प्रस्तुत कविता पर सम्यक तथा पर्याप्त अभ्यास के पश्चात् भाषा-अध्ययन की दृष्टि से अध्यापक बच्चों को प्रश्नोत्तर के जरिए विशेषण के बारे में ज्ञान देंगे। जैसे :- निम्नलिखित शब्दों को श्यामपट्ट पर लिख देंगे तथा इनमें से विशेषणों को छाँटकर श्यामपट्ट पर लिखेंगे:

(अ) मधु, एक अच्छी कलम दो। - **अच्छी**

(आ) नहीं, नहीं, नीली कलम खराब है। - **नीली**

(इ) लाल कलम ही दो। - **लाल**

(ई) रूपम स्वस्थ लड़का है। - **स्वस्थ**

(उ) वह पढ़ाई में भी तेज है। - **तेज**

शिक्षक बिल्ली की चतुराई के बारे में कोई अन्य कविता कक्षा में सुनायेंगे।

इस तरह अध्यापक सहजता के साथ विस्तृत रूप में कक्षा में अन्य प्रश्नाभ्यास करायेंगे और व्याकरण का ज्ञान भी देंगे।

सारांश :

प्रस्तुत संसाधन-इकाई में कक्षा सातवीं के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी हिन्दी कविता /गीत /पद्य के पठन, लेखन और साथ ही पाठ में आनेवाले व्याकरण के ज्ञान पर ध्यान दिया गया है।

विद्यार्थी अपनी सामर्थ्य के अनुसार हिन्दी कविता पढ़ कर, लिखकर सृजनात्मक अभिव्यक्ति कैसे प्रकट कर पायेंगे, उसपर यथासंभव प्रकाश डाला गया है।

संदर्भ ग्रंथसूची :

⇨ Tess India Metarials

⇨ E. Pathsala Matarials

⇨ Learning Out comes at the Elementary Stage by SCERT, Assam.

⇨ मानक हिन्दी व्याकरण रचना

⇨ सरस्वती मानक व्याकरण

सुदृढ़ीकरण :

अध्यापक विद्यार्थियों को उनके स्तर तथा आयु के अनुसार कविता-लेखन के लिए कुछ विषय देंगे। वे उनपर यथासंभव कविता लिखकर आपको दिखायेंगे। इसके लिए आप उन्हें आवश्यकतानुसार निर्देश देंगे।

विस्तारित गतिविधियाँ :

अध्यापक विद्यार्थियों को कम से कम तीन हिन्दी या अपनी भाषा में लिखी हुई कविताएँ, जो उन्हें पसंद हो, संग्रह करने के लिए निर्देश देंगे।

प्रश्न-भण्डार:

क) 'चरण' और 'साँप' के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो।

ख) पाँच विशेषण शब्द लिखो।

ग) बिल्ली और बन्दर की चतुराई के बारे में एक मजेदार कहानी है। ढूँढ़कर लिखो।

प्रस्तुतकर्ता- शुवला दत्त शइकीया

उपनिदेशक,

एस. सी. ई. आर. टी. असम

मुक्त शैक्षिक संसाधन
(दूसरा खण्ड)

विषय : हिन्दी[3] **कक्षा : सातवीं**

कार्यशाला में शामिल व्यक्तिगण :

1. डॉ. अंजलि काकति : वरिष्ठ व्याख्याता, हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उत्तर गुवाहाटी
2. शुवला दत्त शइकीया, उप निदेशक, एस. सी. ई. आर. टी. असम

सम्पादन :

1. डॉ. अंजलि काकति

ग्रुप-लीडर :

शुवला दत्त शइकीया, उप निदेशक, एस. सी. ई.आर. टी. असम

पुनरीक्षण : डॉ. अच्चुत शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यलय।

अलंकरण : डॉ. अंजलि काकति
शुवला दत्त शइकीया

डी.टी.पी. : श्री सुरेन रामसियारी

समन्वयक :
मुजाफर आली, (कनसालटेन्ट)

अधिगम के परिणाम के कमजोर क्षेत्रों के सुधार हेतु प्रस्तुत मुक्त शैक्षिक संसाधन (हिन्दी)

विषय : हिन्दी[3] **कक्षा : सातवीं**

विगत गुणोत्सव के दौरान विद्यार्थियों में हिन्दी गद्य-पठन (विशेषत-लेख) और कथोपकठन के संदर्भ में कमी पायी गयी। इस कमी के दूरीकरण हेतु यह संसाधन-इकाई प्रस्तुत है।

अधिगम के परिणाम :

⇨ प्रस्तुत संसाधन-इकाई के अधिगम से विशेषत : लेख और विद्यार्थियों के हिन्दी में कथोपकथन के विकास संबंधी सम्यक जानकारी प्राप्त होगी।

⇨ विद्यार्थी हिन्दी में शुद्ध गद्य-पठन कैसे सीख पाते हैं और कैसे हिन्दी में कथोपकथन का अभ्यास कर सकते हैं - इन सबके समुचित ज्ञान हमलोगों को इस संसाधन-इकाई से मिलेंगे।

अधिगम परिणाम के उपक्षेत्र :

⇨ इस संसाधन-इकाई के जरिए हिन्दी गद्य की अन्यतम महत्वपूर्ण तथा विद्यार्थियों के लिए उपयोगी विधा निबंध-लेखन (लेख) के बारे में जानकारी प्राप्त होगी।

⇨ प्रस्तुत संसाधन इकाई के जरिए विभिन्न व्यक्तियों की विशिष्ट कथन-शैली को सुनकर समझने की शक्ति विकसित होगी।

⇨ इसके अलावा इस इकाई से स्वतंत्रता संग्राम में पूर्वोत्तर भारत की वीरांगनाओं के साहस, त्याग और बलिदान के बारे में जानकारी प्राप्त होगी।

⇨ प्रस्तुत संसाधन-इकाई से भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम के शहीदों के प्रति श्रद्धा का भाव रखना कितना महत्व रखता है इसके बारे में भी मार्ग-दर्शन मिलेगा।

⇨ इन सबके साथ ही संदर्भित पाठ से विशेषण, लिंग-वचन के अनुसार विशेषण में परिवर्तन, 'ने' विभक्ति-चिह्न के प्रयोग के व्यावहारिक सामान्य ज्ञान से भी हमलोग परिचित हो सकेंगे।

संदर्भ पाठ:

पाठ-दसवाँ- 'स्वाधीनता संग्राम में पूर्वोत्तर की वीरांगनाएँ' (वार्तालाप संबंधी लेख)

महीना :- अगस्त

प्रस्तावना :

असम के अहिन्दी माध्यम के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में सरकारी त्रि-भाषा सूत्र के अनुसार कक्षा छठी से लेकर आठवीं तक तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी का पठन-पाठन होता है। वस्तुत: इस मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)की प्रस्तुति के पीछे शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या नीति- 2005 तथा असम सरकार द्वारा आयोजित विगत गुणोत्सव के परिणाम का आधार है। प्राथमिक स्तर पर भाषा सीखने-सिखाने के संबंध में यह एक जरूरी बात है कि बच्चे विभिन्न प्रकार के परिचित और अपरिचित संदर्भों के अनुसार भाषा का सही प्रयोग कर सकें। वे सहज, कल्पनाशील, प्रभावशाली और व्यवस्थित ढंग से किस्म-किस्म के लेखन कर सकें। यह जरूरी है कि पढ़ना, सुनना, लिखना और बोलना इन चारों प्रक्रियाओं में बच्चे अपने पूर्वज्ञान की सहायता से अर्थपूर्ण वाक्यों की रचना कर पाएँ और कही

गई बात के निहितार्थ को भी पकड़ पाएँ। पढ़ना, पढ़कर अर्थ सहित समझना, दूसरों से उसके बारे में बोलना तथा अपनी तरफ से लिखना ये शिक्षण-प्रक्रिया के अंग हैं।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई में संदर्भ गद्य-पाठ 'स्वाधीनता संग्राम में पूर्वोत्तर की वीरांगनाएँ' (लेख) के माध्यम से विद्यार्थी हिन्दी गद्य के पठन-पाठन को एकाग्रता और रुचि के साथ समझेंगे। देश की स्वतंत्रता के बारे में अध्यापक और विद्यार्थी बातचीत करते हुए हिन्दी में कथोपकथन या संवाद के बारे में ज्ञान प्राप्त करेंगे। संदर्भ पाठ के जरिए विद्यार्थी हमारे देश के स्वतंत्रता आन्दोलन और इस आन्दोलन में पुरुषों के अलावा महिलाओं के भी अवदान उल्लेखनीय हैं इसके बारे में ज्ञान प्राप्त करेंगे। इस संसाधन इकाई में विद्यार्थी हिन्दी की विधा निबंध (लेख) के संबंध में ज्ञान प्राप्त करेंगे। साथ ही विद्यार्थियों को इस इकाई से पाठ्य संबंधित व्यावहारिक व्याकरणिक ज्ञान भी मिलेगा।

<u>प्रस्तुत संसाधन-इकाई को सीखने-सिखाने का महत्व :</u>

हिन्दी शिक्षण में गद्य-पठन और कथोपकथन अध्यापक और विद्यार्थी दोनों के लिए आवश्यक होने के साथ ही महत्वपूर्ण भी है। हिन्दी गद्य-पठन और हिन्दी कथोपकथन में शुद्धता अपरिहार्य और अनिवार्य है। शुद्ध श्रवण से ही शुद्ध पठन और लेखन संभव है। हिन्दी में कथोपकथन के विकास को ध्यान में रखकर प्रस्तुत संसाधन-इकाई को सजाया गया है। संदर्भित पाठ 'स्वाधीनता संग्राम में पूर्वोत्तर की वीरांगनाएँ' के माध्यम से विद्यार्थी स्वतंत्रता संग्राम में भारतवर्ष के अन्य प्रांतों की बाकी महिलाओं की तरह पूर्वोत्तर की महिलाओं के अवदान से भी विद्यार्थी अवगत होंगे। प्रस्तुत संसाधन इकाई के जरिए विद्यार्थी स्वाधीनता की लड़ाई में किस तरह देशवासियों ने मिलकर अंग्रेजों के विरोध में आवाज उठाई थी इसके बारे में ज्ञान प्राप्त करेंगे।

<u>प्रस्तुत संसाधन-इकाई से हम क्या-क्या सीख पायेंगे :</u>

⇨ प्रस्तुत वार्तलाप संबंधी लेख के द्वारा पूर्वोत्तर की महिला सेनानी कनकलता, अमलाप्रभा दास, पुष्पलता दास, भोगेश्वरी फुकननी, चन्द्रप्रभा शइकीयानी, गाइदिल्यू, हेलेन लेपचा आदि वीरांगनाओं के बारे में कथोपकथन के माध्यम से अधिक जानकारी प्राप्त होगी।

⇨ हिन्दी में सहभागी पठन का अनुशीलन कर पायेंगे। इसमें शुद्ध उच्चारण, सही प्रवाह से गद्य पठन के कौशल प्राप्त करेंगे।

⇨ हिन्दी गद्य लेखन के अंतर्गत निबंध-लेख तथा अन्य लेखन में सामर्थ्य प्राप्त करेंगे।

⇨ प्रस्तुत इकाई के सहारे विधार्थियों में हिन्दी में किसी विषय पर कथोपकथन की सामर्थ्य का विकास होगा।

⇨ शुद्धता के साथ हिन्दी में लेखन की दक्षता प्राप्त करेंगे।

⇨ व्यावहारिक व्याकरणिक ज्ञान विशेषत : विशेषण, विशेषण के परिवर्तित रूप तथा 'ने' परसर्ग के प्रयोग के सामान्य ज्ञान प्राप्त करेंगे।

<u>प्रस्तुत संसाधन-इकाई के लिए शिक्षक क्या करेंगे ? (परिकल्पना) :-</u>

⇨ पाठ के प्रति विद्यार्थियों की रुचि और आग्रह पैदा करने के बाद अध्यापक पाठ का आदर्श सस्वर वाचन करेंगे।

⇨ सहभागी वाचन हेतु विद्यार्थियों को छोटे-छोटे दलों में विभाजित करेंगे। यथावश्यक पाठ या

पाठांश का विद्यार्थियों से मौन वाचन करायेंगे।

⇨ पाठ में उल्लिखित वीरांगनाओं से संबंधित स्थानों की पहचान के लिए मानचित्र का उपयोग करेंगे।

⇨ विशेषण, लिंग-वचन के अनुसार विशेषण के परिवर्तित रूप तथा 'ने' विभक्ति-चिह्न का वाक्यों में प्रयोग आदि की सामान्य जानकारी हेतु उपयोगी चार्ट आदि की व्यवस्था करेंगे।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई के लिए आवश्यक शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ :

क्रिया-कलाप-1

सबसे पहले अध्यापक प्रस्तुत पाठ ''स्वाधीनता संग्राम में पूर्वोत्तर की वीरांगनाएँ'' को श्रुति मधुरता के साथ वाचन करेंगे। विद्यार्थी ध्यानपूर्वक सुनेंगे। बाद में अध्यापक पाठ में निहित संदेश को भली-भाँति इसके तात्पर्य सहित विद्यार्थियों को बताएंगे। आवश्यकता पड़ने पर अध्यापक विद्यार्थियों से भी आदर्श वाचन, मौनवाचन आदि करवाएंगे। फिर उनको दलों में विभाजित करते हुए वही पाठ कक्षा में पुन: विद्यार्थियों से पढ़वाएंगे। बाकी बच्चे ध्यानपूर्वक उसे सुनेंगे।

संबंधित पठन के कमजोर क्षेत्र को चिह्नित करके व्याकरणिक गलतियों को सुधारने का प्रयास करेंगे। इसके लिए अध्यापक एक -दो वाक्यों को लेकर वाक्य में प्रयुक्त विशेषण शब्द के साथ लिंग-वचन के संबंध के बारे में ज्ञान-प्रदान हेतु प्रयास करेंगे।

साथ ही पाठ में प्रयुक्त 'ने' परसर्ग (कारक /चिह्न) का प्रयोग वाक्य में कब होता है उसके बारे में भी ज्ञान देने का प्रयास करेंगे।

आइए, हम सब सीचें :-

⇨ विद्यार्थी प्रस्तुत पाठ को ध्यान और एकाग्रता से सुन रहे हैं या नहीं ?

⇨ पाठ उनके लिए मनोग्राही हुआ या नहीं ?

⇨ पाठ को शुद्धता के साथ वे पढ़ पाए या नहीं ?

⇨ पाठ की अंतर्निहित मूल शिक्षा को वे समझ पाए या नहीं ?

क्रिया-कलाप-2

(प्रस्तुत पाठ का अनुशीलन)

अध्यापक पाठ से संबंधित कुछ प्रश्नों के द्वारा विद्यार्थियों को पाठ का सम्यक् ज्ञान देने का प्रयास करेंगे- जैसे-

प्रश्न-**1** स्वाधीनता दिवस कब मनाया जाता है ?

प्रश्न-**2** स्वाधीनता आन्दोलन का नेतृत्व किसने किया था ?

प्रश्न-**3** स्वाधीनता से पहले हमारे देश का नियंत्रण किनके हाथों में था ?

प्रतिफलन :-

⇨ निबंध को पढ़कर विद्यार्थी प्रश्नों के उत्तर तैयार करेंगे (लिखित / मौखिक)

⇨ लिखने और बोलने में होने वाली गलतियों को सुधार देने से उनमें सुधार होंगे।

⇨ इस प्रकार विद्यार्थी प्रश्नों के जवाब ढूँढ़ने के लिए मन से पूरे पाठ को पढ़ेंगे और कक्षा से जुड़े रहेंगे।

⇨ अपनी ज्ञान-बुद्धि से सही-गलत का निर्णय कर पाएंगे।

पाठ आधारित व्याकरण-शिक्षण :

चूंकि तीसरी भाषा हिन्दी के विद्यार्थियों के लिए सातवीं कक्षा में व्याकरण की अलग पाठ्य पुस्तक की व्यवस्था नहीं है, अत: सभी पाठों के साथ व्याकरण-शिक्षण की भी व्यवस्था है। शिक्षक-शिक्षिकागण अपने अनुभव से विद्यार्थियों के व्याकरणिक ज्ञान को बढ़ाने का प्रयास करेंगे।

इस पाठ में भाषा-अध्ययन की दृष्टि से वाक्यों में 'विशेषण' शब्द का प्रयोग और किस तरह लिंग-वचन के अनुसार विशेषण का परिवर्तन हो जाता है। इस पर ज्ञान देने का प्रयास किया जा रहा है। इसके लिए अध्यापक विशेषण शब्द युक्त कुछ वाक्य लेकर वाक्य में विशेषण शब्द के प्रयोग और लिंग-वचन के अनुसार विशेषण शब्द के परिवर्तन के बारे में तथा 'ने' चिह्न के प्रयोग के बारे में ज्ञान देने हेतु अभ्यास तालिका तैयार करेंगे।

क्रिया-कलाप-3

अभ्यास तालिका-1

1. राम एक **अच्छा** लड़का है।

2 . वह **छोटा** लड़का है।

3 . **लाल** गुलाब खिल रहा है।

इन तीनों वाक्यों में विशेषण शब्द का प्रयोग हुआ है। ऊपर रेखांकित शब्द विशेषण हैं। अर्थात, जो शब्द संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताता है उसे **विशेषण** कहते हैं।

अभ्यास तालिका-II

1. मीना **छोटी** लड़की है।

2 . कमल **छोटा** लड़का है।

3 . तीन **छोटे** लड़के जा रहे हैं।

इन तीनों वाक्यों में रेखांकित शब्द छोटी, छोटा, छोटे विशेषण हैं और तीनों के रूप अलग-अलग हैं।

पहले वाक्य में 'छोटी' मीना स्त्रीलिंग एकवचन होने के कारण, दूसरे वाक्य में 'छोटा' कमल पुंलिंग एकवचन होने के कारण, तीसरे वाक्य में 'छोटे' 'तीन लड़के' पुंलिंग बहुवचन होने के कारण विशेषण शब्दों के रूप बदले हुए हैं।

इन दोनों क्रिया-कलापों के बाद अध्यापक संबंधित नियम के ऊपर व्याख्या करेंगे और विद्यार्थी ध्यान से सुनेंगे। इसके बाद शिक्षक विद्यार्थियों को दलों में विभाजित करके सामूहिक रूप से प्रश्न पूछेंगे। इससे अध्यापक को मूल्यांकन करने में सुविधा होगी। इस प्रकार अध्यापक सुविधा और समय के अनुसार विद्यार्थियों के वाक्य-लेखन कौशल का विकास करेंगे।

अभ्यास तालिका-III

1. राम ने पुस्तक पढ़ी।

2 . नेहा ने खाना खाया।

3 . हरि ने अभिनय किया था।

4 . लता ने गीत गाया होगा।

उपरोक्त वाक्यों में 'ने' चिह्न का प्रयोग हुआ है। वाक्य में कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग होता है। यह चिह्न केवल भूतकाल के चार भेदों- सामान्य, आसन्न, पूर्ण और संदिग्घ भूतकाल में ही प्रयोग होता है। परंतु वर्तमान और भविष्यत् काल में इस 'ने' चिह्न का प्रयोग नहीं होता।

क्रिया-कलाप-4

क्षेत्र अध्ययन-1

नव दास मरिगाँव उच्च प्राथमिक विद्यालय के एक हिन्दी शिक्षक हैं। वे कक्षा सातवीं में हिन्दी विषय का पाठ-दान करते हैं। 'स्वाधीनता संग्राम में पूर्वोत्तर की वीरांगनाएँ' के पाठदान कार्य के संदर्भ में उनका अनुभव इसप्रकार है:

उन्होंने प्रथमत: विद्यार्थियों को कक्षा में व्यवस्थित रूप से बिठाया। सामान्य रूप से दिव्यांग और पिछड़े तथा गरीब परिवार के बच्चों को आगे बिठाया। उसके बाद उन्होंने पाठ को शुद्धता, सही लय और प्रवाह के साथ पढ़ना शुरू किया और विद्यार्थियों ने ध्यानपूर्वक सुनकर मूल विषय का भी ज्ञान प्राप्त किया। वाचन के समय उन्होंने बीच-बीच में एकाध छोटे सवाल भी किए। जैसे-

1. कनकलता कौन थी?

2 . हमारा देश अंग्रेजी शासन से कब आजाद हुआ था?

3 . महात्मा गाँधी कौन थे?

चूँकि विद्यार्थी पाठ और कक्षा से जुड़े हुए थे इसलिए उनका जवाब भी सकारात्मक ही आया। इसतरह पठन पूरे होने के पश्चात् उन्होंने उनसे मौन वाचन और सहभागी वाचन भी करवाया।

आएँ, हम सोंचें :

⇨ नव दास ने कैसे आदर्श पठन शुरू किया?

⇨ उन्होंने विद्यार्थियों को कैसे पाठ या पठन के लिए प्रस्तुत किया?

⇨ उन्होंने एकाध सवाल क्यों किये?

इस प्रकार पाठ को अधिक मनोग्राही ढंग से प्रस्तुत करके मूल विषय का ज्ञान देने में दास जी सफल हुए। इसी तरीके से हिन्दी शिक्षक-शिक्षिकागण भी संदर्भित पाठ का ज्ञान सरलता से दे सकेंगे। केवल इसमें कुछ ऐसी बातों का ध्यान रखें-

⇨ विद्यार्थियों की रुचि।

⇨ प्रस्तुत विषय से विद्यार्थी कितना परिचित है।

⇨ प्रस्तुत विषय की स्थानीय महत्वा आदि।

पठनोत्तर क्रिया-कलाप :

इस तरह हिन्दी के प्रस्तुत पाठ संबंधी वाचन / पठन आपके द्वारा समाप्त होने के बाद कक्षा के विद्यार्थी विषय का ज्ञान समझ पाए या नहीं, सीख पाए या नहीं इसे जानने के लिए शिक्षक निम्न लिखित बातों पर ध्यान देंगे :

⇨ सभी विद्यार्थियों ने इसमें समरूप से भाग लिया या नहीं ?

⇨ इससे विद्यार्थियों के मूल्यांकन में मदद मिली या नहीं ?

⇨ अधिगम में सभी विद्यार्थी समता से आगे बढ़ पाए या नहीं ?

इसके लिए अध्यापक कुछ प्रश्नों का लिखित अभ्यास भी कराएंगे, जैसे-

1. स्वाधीनता दिवस कब मनाया जाता है ?

2 . स्वाधीनता आन्दोलन का नेतृत्व किसने किया था ?

3 . 'भारत छोड़ो' आंदोलन के दौरान असम की कौन सी बालिका शहीद हुई थी ?

4 . टिप्पणी लिखिए - कनकलता, हेलेन लेपचा।

5 . 'ने' चिह्न का प्रयोग करके पाँच वाक्य बनाओ।

पूछे गये सवालों के उत्तर लिखित या मौखिक रूप में विद्यार्थियों से लेंगे। यथासंभव चित्र, वीडीओ फूटेज आदि दिखाएंगे और सुनाएंगे। तब इसके प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। विशेषण शब्द की परिभाषा तथा उनके परिवर्तनों के नियमों के बारे में पाठ के आधार पर उदाहरण सहित इसे समझाएंगे। विद्यार्थियों से इसका अभ्यास कराएंगे।

सारांश :-

प्रस्तुत इकाई 'स्वाधीनता संग्राम में पूर्वोत्तर की वीरांगनाएँ' पाठ के माध्यम से आदर्श हिन्दी पठन, सस्वर पठन, मौन पठन और सहभागी पठन पर आलोकपात किया गया है। साथ ही हिन्दी में उच्चारण लय, प्रवाह और हिन्दी में लेखन की अभिव्यक्ति में विद्यार्थी को सक्षमता प्रदान करना इसका मुख्य उदेश्य रहा है। गद्य विधाओं में निबंध लेखन तथा अन्य लेखन में विद्यार्थियों को सक्षम बनाना, हिन्दी में कथोपकथन तथा व्याकरण आदि का ज्ञान देना भी प्रस्तुत इकाई का उदेश्य है।

अतिरिक्त संसाधन :

⇨ National Book Trust of India http:iiwww.ndtindiagov.in

⇨ www.indiaedu.in

संदर्भ ग्रंथ-सूची :

⇨ Tess India Metarials

⇨ E. Pathsala Matarials

⇨ Learning Out comes at the Elementary Stage by SCERT, Assam.

⇨ मानक हिन्दी व्याकरण रचना

सुदृढ़ीकरण :

अध्यापक असम से भिन्न पूर्वोत्तर भारत के अन्य प्रातों की वीरांगनाओं के नाम आदि के बारे में बताएंगे और विद्यार्थियों को समाचार-पत्र या पुस्तकों के माध्यम से जानकारी जुटाने के लिए कहेंगे। साथ ही हिन्दी निबन्ध लेखन के अलावा भ्रमण-वृत्तांत, कहानी, कविता गद्य आदि के बारे में भी समझा देंगे।

विस्तारित गतिविधियाँ :

अध्यापक विद्यार्थियों को असम की वीरांगनाओं के अलावा मुला गाभरु, सती जयमती के जीवन एवं कार्यों के बारे में टिप्पपी प्रस्तुत करने का निर्देश देंगे।

प्रश्न-भण्डार:

क) भोगेश्वरी फुकननी के बारे में लिखो।

ख) स्वाधीनता से पहले हमारे देश का नियंत्रण किनके हाथों में था?

ग) इनमें से किसी एक के बारे में एक अनुच्छेद लिखो :

1857 ई का आन्दोलन,

1942 ई का आन्दोलन

घ) चित्रों को देखकर पहचानो-

1. हेलेन लेपचा, **2.** गाइदिल्यू, **3.** कनकलता

मुक्त शैक्षिक संसाधन
(दूसरा खण्ड)

विषय : हिन्दी[3] **कक्षा : आठवीं**

कार्यशाला में शामिल व्यक्तिगण :

1. डॉ. अंजलि काकति : वरिष्ठ व्याख्याता, हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उत्तर गुवाहाटी

2. शुवला दत्त शइकीया, उप निदेशक, एस. सी. ई. आर. टी. असम

सम्पादन :

1. डॉ. अंजलि काकति

ग्रुप-लीडर :

शुवला दत्त शइकीया, उप निदेशक, एस. सी. ई.आर. टी. असम

पुनरीक्षण : डॉ. अच्युत शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यलय।

अलंकरण : डॉ. अंजलि काकति
शुवला दत्त शइकीया

डी.टी.पी. : श्री सुरेन रामसियारी

समन्वयक :
मुजाफर आली, (कनसालटेन्ट)

अधिगम के परिणाम के कमजोर क्षेत्रों के सुधार हेतु प्रस्तुत मुक्त शैक्षिक संसाधन (हिन्दी)

कक्षा- आठवीं **विषय : हिन्दी[3]**

विगत गुणोत्सव के दौरान विद्यार्थियों में कविता /गीत के पाठ /गायन /लेखन और सस्वर पाठ या आवृत्ति के संदर्भ में कमी पायी गयी। इस कमी के दूरीकरण हेतु यह संसाधन-इकाई प्रस्तुत है।

अधिगम के परिणाम :

⇨ प्रस्तुत संसाधन-इकाई के अधिगम से हमें हिन्दी की कविता और गीत-जैसी आकर्षक पद्य विधाओं की सम्यक जानकारी प्राप्त होगी।

⇨ कविता एवं गीत किस प्रकार सही उच्चारण, लय, उतार-चढ़ाव एवं हाव-भाव के साथ पढ़े तथा गाये जाएँ अर्थात् प्रभावकारी ढंग से कविता का सस्वर पाठ कैसे किया जाए इत्यादि बातों का समुचित ज्ञान हम लोगों को इस संसाधन-इकाई के सही अनुधावन से मिल जाएगा।

⇨ आज की मानक हिन्दी के आलावा प्राचीन बोली ब्रजभाषा का ज्ञान प्राप्त होगा।

अधिगम परिणाम के उपक्षेत्र :

⇨ इस संसाधन-इकाई के जरिए कविता और गीत के पठन, लेखन, गायन के सम्यक ज्ञान की प्राप्ति के अलावा इस सर्जनात्मक कला से जुड़ा हुआ रस अथवा आनन्द भी मिलेगा।

⇨ इस संसाधन-इकाई के जरिए प्राचीन कवियों का परिचय प्राप्त होगा।

⇨ साथ ही सम्बंधित पद से कृष्ण की बाल-लीलाओं के वर्णन का ज्ञान भी प्राप्त होगा।

⇨ संदर्भित पद के जरिए श्रुतिसम शब्दों की भिन्नार्थकता का ज्ञान, शब्द-युग्मों का अंतर, पर्यायवाची शब्दों की सामान्य जानकारी भी हमें प्राप्त होगी।

दसवाँ पाठ: 'गोकुल लीला' (कविता), महीना : अगस्त

प्रस्तावना :

असम के अहिन्दी माध्यम के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में सरकारी त्रि-भाषा सूत्र के अनुसार कक्षा छठी से लेकर आठवीं तक तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी का पठन-पाठन होता है। वस्तुत: इस मुक्त अधिगम संसाधन (हिन्दी) की प्रस्तुति के पीछे शिक्षा अधिकार अधिनियम-2009 और राष्ट्रीय पाठ्य-चर्या नीति 2005 तथा असम सरकार द्वारा आयोजित विगत गुणोत्सव के परिणाम का आधार है।

कविता और गीत हम सभी को अत्यंत प्रिय हैं, क्योंकि इनसे अत्यंत कम समय में असीम आनंद मिलता है। इनकी रचना प्राचीन काल से वर्तमान समय तक लगातार होती आ रही है। कविता एवं गीत में मूलत: सूक्ष्म भाव, आवेग तथा अनुभूति की अभिव्यक्ति होती है। गौण रूप से इनमें विचार-चिंतन को भी स्थान मिलता है। हमें इन बातों का ज्ञान होना चाहिए कि कविता और गीत किस प्रकार पढ़े एवं गाये जाते हैं, कविता और गीत किस प्रकार से रचे जाते हैं और कविता का पाठ किस तरह से समुचित हाव-भाव के साथ किया जाता है आदि। इन्हीं बातों को इस

संसाधन-इकाई में 'गोकुल लीला' शीर्षक कविता के संदर्भ में आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई को सीखने-सिखाने का महत्व :

कविता, गीत, बालगीत आदि किसी भी साहित्यिक भाषा की महत्वपूर्ण विधाएँ हैं। ये विशेषकर उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए अत्यंत मनोग्राही हैं। ये कविता, गीत आदि पठन, प्राक-पठन कौशल की दृष्टि से भी उपयोगी हैं। कविता, गीत आदि गेय और आवृत्तियुक्त भी हैं। बच्चे इन्हें गा कर आनन्द प्राप्त करने के साथ ही शुद्ध लय, उच्चारण आदि के साथ पठन और अभिव्यक्ति के कौशल भी प्राप्त करते हैं। इसके द्वारा बच्चों में लेखन सामर्थ्य का भी विकास होता है। विद्यार्थी सर्जनात्मक विकास प्राप्त करते हैं। इस प्रकार प्रस्तुत इकाई का महत्व अपरिसीम है।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई से हम क्या-क्या सीख पायेंगे ?

- ⇨ हिन्दी में प्राक-पठन कौशल के रूप में कविता /पद्य पढ़ने या गाने की समर्थता प्राप्त होगी।
- ⇨ विद्यार्थियों की हिन्दी में सुधार और उन्नति के लिए गीत, कविता आदि के व्यवहार के नमूने मिलेंगे।
- ⇨ बालकृष्ण पर आधारित सूरदास की कविता और माधवदेव लिखित बरगीत दोनों के मूल आधार एक ही है- इसकी जानकारी प्राप्त होगी।
- ⇨ श्रुतिसम शब्दों की भिन्नार्थकता तथा शब्दयुग्मों के अंतर आदि का सामान्य ज्ञान प्राप्त होगा।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई के लिए शिक्षक क्या-क्या करेंगे ? (परिकल्पना) :

- ⇨ अध्यापक कक्षा के विद्यार्थियों के सम्मुख कोई भी गीत या कविता पढ़ने के साथ-साथ शुद्ध उच्चारण, लय, प्रवाह और हाव-भाव के साथ उसका गायन या आवृत्ति करेंगे।
- ⇨ विद्यार्थियों से उस पठित या अपठित गीत / कविता का सुन्दर रूप से वाचन, गायन और आवृत्ति करायेंगे।
- ⇨ अध्यापक कविता / गीत का पठन / गायन अंग-भंगिमाओं के साथ करेंगे। विद्यार्थी भी वैसा ही करेंगे।
- ⇨ कविता-गीत के प्रति विद्यार्थियों में रुचि और आग्रह पैदा करने के लिए अध्यापक जरूरी प्रतियोगिताओं का भी आयोजन करेंगे।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई के लिए आवश्यक शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ :

कविता बच्चों के लिए उपयोगी होने के साथ-साथ यह उनके लिए रोचक और आनन्ददायी भी होती है। अत: इसके प्रति विद्यार्थियों का सामान्यत : झुकाव रहता ही है। फिर भी पाठ के प्रति उनकी रुचि की जानकारी हेतु उनके पूर्वज्ञान की परीक्षा भी जरूरी हो जाती है। अध्यापक उनके उपयोगी एक / दो कबीर /सूरदास आदि के दोहे या पद गाकर उनके पूर्वज्ञान की परीक्षा लेंगे।

क्रिया-कलाप-1

शिक्षक क्या करेंगे :

अध्यापक सबसे पहले प्रस्तुत कविता के संबंध में बच्चों के पूर्वज्ञान की जानकारी प्राप्त कर लेंगे और उसके बाद पाठ्य पुस्तक की कविता निकालेंगे और बच्चों को भी पाठ्य पुस्तक की प्रस्तुत कविता को निकालने के लिए कहेंगे।

अध्यापक शुद्ध लय, उच्चारण के साथ पूरी कविता या कवितांश पढ़ेंगे। जैसे-

किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत।
मनिमय कनक नंद कैं आँगन, बिंब पकरिबै, धावत।
कबहु निरखि हरि, आपु छाँह कों, कर सौं पकरन चाहत।
किलकि हँसत राजत द्वै दतियाँ, पुनि-पुनि तिहिं अवगाहत।
कनक-भूमि पर कर-पग-छाया, यह उपमा इक राजति।
करि-करि प्रतिपद प्रतिमनि बसुधा, कमल बैठकी साजति।
बाल-दसा-सुख निरखि जसोदा, पुनि-पुनि नन्द बुलावत।
अँचरा तर लै ढाँकि, सूर के प्रभु कौं दूध पियावति।।

इसतरह अध्यापक स्वयं पद्य / पद्यांश का विद्यार्थियों के सामने वाचन करेंगे और एकाग्रता के साथ वे सुनते जायेंगे।

ऐसे ही कवितांश या पूरी कविता का पठन / सहभागी वाचन बच्चों से भी करायेंगे। बच्चों को दलों में विभाजित करके उनमें से एक-एक के द्वारा यह कार्य संपन्न करेंगे। बाकी विद्यार्थी वाचन का अनुसरण करेंगे।

अध्यापक बच्चों के पठन में उच्चारण, लय, उतार-चढ़ाव की गलतियों को पकड़ेंगे भी और सुधारेंगे भी।

अध्यापक ध्यान देंगे :

⇨ विद्यार्थियों ने मन और एकाग्रता के साथ कविता-पठन में समरूप से भाग लिया या नहीं ?

⇨ शुद्धता के साथ कविता को वे पढ़ पाये या नहीं ?

फिर आप सही अर्थ के साथ सहजता और सरलता से कविता में निहित भाव की व्याख्या बच्चों के सामने करेंगे, कठिन शब्दों के अर्थ लिखवाकर:

जैसे-

	शब्द	**अर्थ**
1.	किलकत	किलकारी मारते हैं
2.	कान्ह	कृष्ण
3.	घुटुरुवनि	घुटनों के बल
4.	कनक	सोना
5.	निरखि	देखकर
6.	कर	हाथ, आदि

क्रियाकलाप-2

सही सुर और लय के साथ हिन्दी में कविता / गीत आदि गाना / पढ़ना / आवृत्ति करना-

क्षेत्र अध्ययन-1

कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों में हिन्दी में सही उच्चारण, लय के साथ कविता पठन या आवृत्ति शक्ति का विकास करने के लिए नलबारी जिले के सरकारी बालिका विद्यालय की हिन्दी

शिक्षिका श्रीमती शुवला बरुवा ने क्या किया, उसी का वर्णन नीचे प्रस्तुत है :

शुवला जी ने कक्षा में विद्यार्थियों को उनकी पसंद की कोई भी कविता चाहे वह हिन्दी की हो या असमीया की, उसे स्वयं या किसी के सहारे एक हफ्ते तक उसका सही उच्चारण तथा अंग-भंगिमा के साथ तैयारी करने हेतु निर्देश दिये। जरूरत के मुताबिक उसमें उन्होंने यथावश्यक मदद की।

एक हफ्ते के बाद उन्होंने उनकी चुनी हुई कविताएँ लीं और उनमें कविता पठन /आवृत्ति की एक प्रतियोगिता रखी। उसमें उनके लिए पुरस्कार की भी व्यवस्था की। सभी बच्चों ने बारी-बारी से अपनी कविता पढ़ी-सही लय, शुद्ध उच्चारण और सही भाव-भंगिमाओं के साथ। स्कूल के अन्य शिक्षकों एवं प्रधान अध्यापक ने भी उसे देखा, सुना। सबको उन्होंने वाह-वाही दी।

इस तरह शुवला जीने कविता पठन को आवृत्ति और अभिनय से जोड़ा तो बच्चों में इसका योगात्मक परिणाम देखा गया।

आइए, हम सब सोचें :

- ⇨ शुवला जी ने कविता / गीत पठन / गायन के प्रति बच्चों की रुचि को कैसे पहचाना और उनकी प्रतिभा को बाहर लाने के लिए उन्होंने क्या किया ?
- ⇨ क्यों कविता-पठन को सिखाने में उन्होंने विद्यार्थियों के लिए प्रतियोगिता को उचित समझा ?
- ⇨ शुवला बरुवा के स्थान पर हम होते, तो क्या करते ?

क्रियाकलाप-3

प्रस्तुत पाठ का अनुशीलन :

प्रस्तुत पाठ के अनुशीलन के सहारे प्राचीन कविता संबंधी ज्ञान देने के प्रयास के अलावा अध्यापक प्राचीन कविता और आधुनिक कविता में अंतर क्या है, प्राचीन कवियों की परिचय तथा प्राचीन कवियों के कविता में प्रयुक्त शब्द और भाषा आदि क्या हैं प्रश्नोत्तर शैली से समझाने का प्रयास करेंगे। अध्यापक कविता में प्रयुक्त शब्द, जैसे-

1. किलकत
2. कान्ह
3. घुटुरुवनि
4. कनक

5. निरखि

6. दतियाँ, आदि ब्रज भाषा के हैं- उदाहरण सहित समझाने का प्रयास करेंगे।

इसके उपरान्त अध्यापक पाठ में से महत्वपूर्ण दो-तीन सवाल विद्यार्थियों से पूछेंगे :

1. माता यशोदा बालक कृष्ण को किस तरह दूध पिलाती हैं ?

2. बालक कृष्ण किस प्रकार आंगन में आचा है ?

3. यशोदा बार-बार नंद को क्यों बुलाती हैं ?

प्रस्तुत कविता पर सम्यक् तथा पर्याप्त अभ्यास के पश्चात भाषा-अध्ययन की दृष्टि से श्रुतिसम शब्द अर्थात् जो शब्द उच्चारण की दृष्टि से मिलते-जुलते हैं, लेकिन उनके अर्थ एक-दूसरे से पूर्णत: भिन्न होते हैं- उनके बारे में अध्यापक ज्ञान देने का प्रयास करेंगे। जैसे- निम्नलिखित शब्दों को श्यामपट्ट पर लिख देंगे तथा उनके भिन्न अर्थ को समझाऐंगे:

अंश - भाग क्रीत - खरीदा हुआ कुल - वंश पानी - जल

अंस - कंधा कृत - किया हुआ कूल - किनारा पाणि - हाथ

इसके उपरांत अध्यापक यह भी समझा देंगे कि शब्द-युग्मो और शब्द किसे कहते हैं, शब्द-युग्मों में अंतर क्या हैं ? अध्यापक निम्नलिखित शब्द-युग्मों को श्यामपट्ट पर लिखकर सही उच्चारण के साथ अंतर समझाएंगे, जैसे-

बात	दिन	अन्न	अणु
वात	दीन	अन्य	अनु

इस तरह अध्यापक विस्तृत रूप में सहजता के साथ कक्षा के विद्यार्थियों को भिन्नार्थी शब्द और शब्द-युग्मों का ज्ञान देते हुए ज्यादा से ज्यादा अभ्यास कराएंगे ताकि वे भली-भाँति इन्हें सीख पायें, समझ पायें।

सारांश :

इस प्रकार प्रस्तुत संसाधन-इकाई में कक्षा आठवीं के हिन्दी विषय के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी कविता/गीत-लेखन /पठन और साथ ही श्रुतिसम भिन्नार्थी शब्द और शब्द-युग्मों पर आलोकपात किया गया है। विद्यार्थी अपने स्तर और सामर्थ्य के अनुसार हिन्दी या अपनी भाषा में कविता लिखकर सर्जनात्मक अभिव्यक्ति कैसे प्रकट कर पायेंगे, उस पर यथा संभव प्रकाश डाला गया है।

संदर्भ ग्रंथसूची :

⇨ Tess India Metarials

⇨ E. Pathsala Matarials

⇨ Learning Out comes at the Elementary Stage by SCERT, Assam.

⇨ मानक हिन्दी व्याकरण रचना

⇨ सरस्वती मानक व्याकरण

सुदृढ़ीकरण :

अध्यापक विद्यार्थियों को उनके स्तर तथा आयु के अनुसार कविता-लेखन के लिए कुछ विषय देंगे। वे उन पर यथासंभव कविता लिखकर आपको दिखायेंगे। इसके लिए आप उन्हें आवश्यकतानुसार निर्देश देंगे।

विस्तारित गतिविधियाँ :

अध्यापक विद्यार्थियों को कम से कम तीन हिन्दी या अपनी भाषा में लिखी हुई कविताएँ, जो उन्हें पसंद हो, संग्रह करने के लिए निर्देश देंगे।

प्रश्न-भण्डार:

क) 'कृष्ण' शब्द के पाँच पर्यायवाची शब्द लिखो।

ख) सूरदास की तरह अपनी भाषा में श्रीकृष्ण के बाल-वर्णन के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध कवि कौन हैं ?

ग) श्रीमन्त शंकरदेव और श्रीश्रीमाधव देव के बारे में क्या जानते हो ? उनलोगों की रचना-कृति के बारे में संक्षेप में, लिखों।

प्रस्तुतकर्ता- डॉ. अंजलि काकति
वरिष्ठ व्याख्याता,
हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
उत्तर गुवाहाटी

मुक्त शैक्षिक संसाधन
(दूसरा खण्ड)

विषय : हिन्दी[3] **कक्षा : आठवीं**

कार्यशाला में शामिल व्यक्तिगण :

1. डॉ. अंजलि काकति : वरिष्ठ व्याख्याता, हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उत्तर गुवाहाटी
2. शुवला दत्त शइकीया, उप निदेशक, एस. सी. ई. आर. टी. असम

सम्पादन :

1. डॉ. अंजलि काकति

ग्रुप-लीडर :

शुवला दत्त शइकीया, उप निदेशक, एस. सी. ई.आर. टी. असम

पुनरीक्षण : डॉ. अच्युत शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यलय।

अलंकरण : डॉ. अंजलि काकति
शुवला दत्त शइकीया

डी.टी.पी. : श्री सुरेन रामसियारी

समन्वयक :
मुजाफर आली, (कनसालटेन्ट)

अधिगम के परिणाम के कमजोर क्षेत्रों के सुधार हेतु प्रस्तुत मुक्त शैक्षिक संसाधन (हिन्दी)

कक्षा- आठवीं **विषय : हिन्दी[3]**

विगत गुणोत्सव के दौरान विद्यार्थियों में गद्य/लेख पठन और लेखन कौशल और ज्ञान के संदर्भ में कमी पायी गयी। इस कमी के दूरीकरण हेतु यह संसाधन-इकाई प्रस्तुत है।

अधिगम के परिणाम :

⇨ प्रस्तुत संसाधन-इकाई के अधिगम से हमें हिन्दी गद्य (लेख) पठन का ज्ञान मिलेगा और विद्यार्थी इस संदर्भ में लेखन-अभिव्यक्ति के विकास सम्बंधी सम्यक जानकारी प्राप्त करेंगे।

⇨ विद्यार्थी अपने मनोभावों और विचारों को उपयुक्तता के साथ बोलकर या लिखकर अभिव्यक्ति देने की सामर्थ्य प्राप्त करेंगे।

अधिगम परिणाम के उपक्षेत्र :

⇨ शुद्धता के साथ हिन्दी भाषा सीखने के लिए कैसे पढ़े-लिखे जाते हैं इसके बारे में शुद्धता का मार्गदर्शन मिलेगा।

⇨ आँखों-देखी घटनाओं को सहजता से हिन्दी में कैसे अभिव्यक्ति दे सके- इसकी जानकारी मिलेगी।

⇨ अपने परिवेश में प्राप्त वस्तुओं या प्राकृतिक आपदाओं पर अनुच्छेद लिखने का तरीका सीख पायेंगे।

⇨ प्रस्तुत संसाधन-इकाई के जरिए आवेदन-पत्र, शिकायती-पत्र आदि कैसी लिखे जाते हैं-इसका व्यावहारिक ज्ञान मिलेगा।

⇨ इसके साथ ही संदर्भित लेख के जरिए किसी विषय के ऊपर लिखित परियोजना प्रस्तुति के व्यावहारिक ज्ञान से भी हमलोग परिचित हो सकेंगे।

संदर्भ पाठः

बारहवाँ पाठः 'बाढ़ का मुकाबला' (लेख), महीना : सितम्बर

प्रस्तावना :

असम के अहिन्दी माध्यम के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में सरकारी त्रि-भाषा सूत्र के अनुसार कक्षा छठी से लेकर आठवीं तक तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी का पठन-पाठन होता है। वस्तुतः इस मुक्त अधिगम संसाधन (हिन्दी) की प्रस्तुति के पीछे शिक्षा अधिकार अधिनियम-2009 और राष्ट्रीय पाठ्य-चर्या नीति 2005 तथा असम सरकार द्वारा आयोजित विगत गुणोत्सव के परिणाम का आधार है। विद्यार्थी सुनी हुई और पढ़ी हुई बातों की अभिव्यक्ति दो प्रकार से देते हैं, दे सकते हैं बोलकर और लिखकर। उनके लिए चुनौती पूर्ण होते हैं। सुनकर, समझकर भी कदाचित वे उस पर लिखित या मौखिक रूप से शुद्ध अभिव्यक्ति कर नहीं पाते। प्रस्तुत संसाधन-इकाई में संदर्भ गद्य-पाठः 'बाढ़ का मुकाबला' के माध्यम से विद्यार्थी हिन्दी गदय-पठन को सीखने के साथ ही इसपर या इसप्रकार की आखों-देखी प्राकृतिक आपदाओं पर अपनी अभिव्यक्ति, चाहे वह लिखित हो या मौखिक, शुद्धता से दे सकेंगे। साथ ही आवेदन तथा

शिकायती पत्र लेखन के बारे में भी कौशल प्राप्त करेंगे। इन्हीं बातों को इस संसाधन इकाई में 'बाढ़ का मुकाबला' शीर्षक पाठ के संदर्भ में रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई को सीखने-सिखाने का महत्व :

हिन्दी भाषा-शिक्षण में यही प्रधान उद्देश्य रहता है कि विद्यार्थी शुद्ध सुनें, पढ़ें, बोलें और लिखें। यही कारण है कि जितना महत्व है विद्यर्थियों को शुद्धता से हिन्दी गद्य का पठन-पाठन करवाने का, उतना ही महत्व रहता है शुद्धता से उन्हें सही अभिव्यक्ति कौशल भी सिखाने का। इसलिए प्रस्तुत संसाधन इकाई से प्रधानत: संदर्भित पाठ-'बाढ़ का मुकाबला' के जरिए विद्यार्थी सही पठन-पाठन के ज्ञान प्राप्त करने के साथ ही लिखी हुई बातों को पुन: हिन्दी में शुद्ध अभिव्यक्ति देने के कौशल भी सीख पायेंगे। साथ ही बाढ़ या वैसी प्राकृतिक आपदाओं से जूझने और इसके प्रतिरोधार्थ वे नई जानकारी भी प्राप्त करेंगे। विद्यार्थी को इसके लिए प्रशासन के साथ सम्पर्क हेतु शिकायती, आवेदन जैसे पत्र-लेखन में सक्षम बनाने के उद्देश्य से भी प्रस्तुत संसाधन इकाई को आगे रखा गया है।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई से हम क्या-क्या सीख पायेंगे ?

- ⇨ गद्य के पठन-पाठन का शुद्ध ज्ञान प्राप्त करने के साथ ही शुद्ध गद्य लेखन का ज्ञान भी प्राप्त करेंगे।
- ⇨ प्रस्तुत संसाधन-इकाई के जरिए विद्यार्थी पत्र-लेखन के जरिए अपनी अभिव्यक्ति की सक्षमता प्राप्त करेंगे।
- ⇨ विद्यार्थियों में हिन्दी में किसी विषय पर टिप्पणी लिखने की सामर्थ्य का विकास होगा।
- ⇨ इसके अलावा व्यावहारिक रूप में पत्र-लेखन में आवेदन पत्र तथा शिकायती पत्र लेखन के सम्बंध में विद्यार्थी दक्षता प्राप्त करेंगे।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई के लिए शिक्षक क्या-क्या करेंगे। (परिकल्पना) :

- ⇨ पाठ के प्रति विद्यार्थियों की रुचि और आग्रह पैदा करने के बाद अध्यापक पाठ का सस्वर वाचन उनके सामने करेंगे। विद्यार्थी ध्यान पूर्वक सुनेंगे।
- ⇨ पाठ की यथावश्यक व्याख्या अध्यापक अपनी कक्षा के विद्यार्थियों के सामने करेंगे ताकि वे उस पर दिलचस्पी से सुनें, सीखें।
- ⇨ विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं से संबंधित चित्र वी.डि.ओ. फूटेज आदि का इस्तेमाल करेंगे।
- ⇨ विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं के सम्बंध में अध्यापक विद्यार्थियों से समाचार पत्रों या अन्य साधनों से जानकारी जुटाने को कह सकते हैं।
- ⇨ प्राप्त जानकारी की टिप्पणियों को लिखित रूप में अभ्यास कराएंगे।
- ⇨ इस संदर्भ में शिकायती, आवेदन पत्र लिखने का कौशल भी सिखाएंगे।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई के लिए आवश्यक शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ :

गद्य-लेख बच्चों के लिए उपयोगी होने के साथ-साथ यह उनके लिए रोचक और आनन्ददायी भी होता है। अत: इसके प्रति विद्यार्थियों का सामान्यत:झुकाव रहता ही है। फिर भी पाठ के प्रति उनकी रूचि की जानकारी हेतु उनके पूर्वज्ञान की परीक्षा भी जरूरी हो जाती है। अध्यापक उनके उपयोगी एक-दो गद्यात्मक लेखों की चर्चा करके उनके पूर्वज्ञान की परीक्षा लेंगे।

क्रिया-कलाप-1

(अभिप्रेरक) :

अध्यापक प्रथमत:अपनी कक्षा के विद्यार्थियों से प्रस्तुत पाठ के संदर्भ में उनके पूर्वज्ञान की परीक्षा लेते हुए उन्हें पाठ के लिए तैयार करेंगे। इसके लिए अध्यापक विद्यार्थियों से पाठ के विषय के संदर्भ में कुछ आवश्यक प्रश्न पूछेंगे :

जैसे-

1. बरसात में क्या होती है ?

उत्तर: बारिश ज्यादा होती है।

2. अच्छा, बारिश ज्यादा होने से क्या होता है ?

उत्तर: अधिक मात्रा में वर्षा होने पर सभी जगह पानी फैल जाता है।

3. ऐसा क्यों होता है ?

उत्तर: क्योंकि पानी की मात्रा अधिक होने पर नाले, नदी, तालाब आदि सभी भर जाते हैं।

4. ऐसा होने पर क्या हो सकता है ?

उत्तर: बाढ़ आ जाती है।

5. बाढ़ क्या है ?

उत्तर: प्राकृतिक आपदा है।

ऐसे ही अध्यापक विद्यार्थियों के प्रस्तुत पाठ के संदर्भ में उनके पूर्वज्ञान परीक्षा लेते हुए (यथासंभव उन्हें ऐसी जानकारी देकर) कक्षा में पाठ की शुरुआत करेंगे। इसके लिए वे बाढ़ या अन्य प्राकृतिक आपदाओं, जैसे :- भूकंप, भू-स्खलन, सुनामी के चित्रों या वी.डी.ओ. फूटेज का भी यथासंभव सहारा लेंगे।

क्रिया-कलाप-2

उपस्थापन - आदर्श गद्य पठन और लेखन :

- ⇨ पहले अध्यापक शुद्ध उच्चारण, लय, गति के साथ प्रस्तुत गद्य पाठ में से चुने हुए पाठ्यांश का कक्षा में विद्यार्थियों के आगे आदर्श वाचन करेंगे।
- ⇨ सुन्दर अभिव्यक्ति के साथ पाठ की व्याख्या करेंगे।
- ⇨ अध्यापक शुद्धता से वर्ण, शब्द, वाक्य का ऐसे उच्चारण करें ताकि विद्यार्थी का ध्यान उस पर केन्द्रित रहे।
- ⇨ शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ाए हुए पाठ्यांशों का अध्यापक बारी-बारी से भी विद्यार्थियों ने सस्वर पठन करायेंगे और उनकी पठन सम्बंधी गलतियों को सुधार देंगे।

⇨ अपने द्वारा किए गए पठन के साथ-साथ अध्यापक स्वयं विद्यार्थियों के इसके प्रति मनोयोग या एकाग्रता का निरीक्षण भी करेंगे। ऐसा करने से-

(क) विद्यार्थी पठन के साथ मनोयोग एवं एकाग्रता से जुड़े रहेंगे।

(ख) इसमें विद्यार्थी लय, यति, प्रवाह पठन के संदर्भ में कब, कैसे, और कहाँ होते हैं, इसकी साथ - साथ खोज भी करते रहेंगे।

क्रिया-कलाप-3

(लेखन-अभिव्यक्ति हेतु अभ्यास)

कक्षा में अध्यापक बाढ़ के विषय में, जैसे- क्यों होती है, कैसे होती है, बाढ़ आने से क्या प्रभाव पड़ता है अपने आस-पास के बातावरण में, इसके प्रतिरोध के लिए हमें क्या-क्या करना चाहिए इत्यदि विषय पर अधिक स्पष्टता और सहजता से विद्यार्थियों के सामने व्याख्या करेंगे। विद्यार्थी इसे रुचिपूर्वक सुनें इसका वे ध्यान रखेंगे। बीच में एक आध उनसे सवाल-जवाब भी करेंगे। अब कही हुई बातों पर विद्यार्थियों ने कैसे क्या अमल किया इसकी परीक्षा अध्यापक उन्हें कक्षा में ही कुछ बाढ़ या वैसे ही किसी दूसरे विषय पर, यदि वे कर सकें तो, छोटी टिप्पणी लिखने देंगे। अध्यापक उनपर अपना निरीक्षण रखेंगे। विद्यार्थी जब लिखकर अपनी टिप्पणी को अध्यापक को दिखाएँगे तो अध्यापक देखेंगे और गलतियों को सुधार देंगे।

आइए : हम सब सोचें :

⇨ क्या बच्चों ने अध्यापक की व्याख्या को ध्यानपूर्वक सुना है या नहीं ?

⇨ सुनी हुई बातों पर वे लोग अभिव्यक्ति दे पाते हैं या नहीं ?

⇨ अभिव्यक्ति देने हेतु वे कैसे सक्षम बनें ?

⇨ शिक्षक और विद्यार्थी में सह:सम्बध स्थापित हुआ या नहीं ? आदि।

क्रिया-कलाप-4

(अपने परिवेश या आँखों-देखी घटनाओं को सहजता से लिखित या मौखिक अभिव्यक्ति देने का कौशल प्राप्त करना)

क्षेत्र-अध्ययन -1

अपने परिवेश या किसी की आँखों-देखी घटनाओं-वस्तुओं के सम्बंध में सामान्य लेखन की अभिव्यक्ति हेतु विद्यार्थियों को कैसे अनुप्राणित किया, इस संदर्भ में मोरिगाँव उच्चतर माध्यमिक बालिका विद्यालय की हिन्दी शिक्षिका विजया बरुवा का अनुभव निम्न लिखित रूप में प्रस्तुत है-

एक बार मैंने बाढ़ के समय अपनी कक्षा के छात्र-छात्राओं को इस सम्बंध में व्यावहारिक ज्ञान देने के लिए अन्य शिक्षकों और दो-तीन गाड़ी की व्यवस्था की और अभिभावकों के साथ बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों को दिखाने के लिए एक गाड़ी की व्यवस्था में चले गए। साथ में उन्हें कागज और कलम रखने के लिए कहा। विद्यार्थियों को पहले बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के गाँव, खेती आदि की दिखाए,

शिविर-स्थलों को दिखाया, सहायक कर्मियों को भी दिखाया और उसने बातचीत भी करवायी। फिर चिकित्सा सहायक दलों से भी हमने उनकी भेंट कराई और उनसे भी बाढ़ के समय हुई शारीरिक बीमारियों के सम्बंध में जानकारी दिलवाई। सभी जानकारियों को उन्होंने अपनी कापियों में नोट किया। हमने दोपहर को एक सामुहिक सजागता कार्यक्रम में भी भाग लिया। वहाँ बाढ़-प्रभावित लोग, गाँव के मुखिया, विधायक, प्रशासन के लोग, **NGO** के लोग, पुलिस विभाग के लोग आदि भी मौजूद थे। वहाँ बाढ़ के संबंध में बहुत सी आलोचनाएँ-चर्चाएँ हूईं। इस पर प्रशासन के कदम, अन्य सहायता, बिमारियों से मुकाबला, खाद्य की आपूर्ति आदि पर विस्तृत चर्चा हुई। सभी बातों को विद्यार्थियों ने ध्यानपूर्वक सुना और देखा भी। वे प्रसन्नित भी हुए-बाढ़ के संदर्भ में इस तरह आखों की देखा ज्ञान प्राप्त करते हुए। इस प्रकार हम उस बाढ़ पीड़ित क्षेत्र की परिक्रमा समाप्त कर वापस आए।

मैंने सभी बातों पर विद्यार्थियों से यथा सम्भव नोट-प्रस्तुति लिखित रूप में करने को कहा। स्कूल सप्ताह के अवसर पर विद्यार्थियों ने बाढ़ के सम्बंध में अपने द्वारा देखी-सुनी और समझी हुई बातों को अपने स्तर पर लिखकर उसे मुक्त कक्षा में दिखाया। मैंने देखा कि जिस तरह से बाढ़ या उस प्राकृतिक वातावरण को उन्होंने देखा ठीक वैसे ही उसे वर्णित करने या लिखित अभिव्यक्ति देने की चेष्टा उन्होंने की। बाढ़ संबंधी लगभग सभी आनुषंगिक पहलुओं को उन्होंने अपनी टिप्पणियों में समेटा। उनकी गलतियों को मैंने सुधार दिया। इस तरह से विद्यार्थी खुद आँखों-देखी बातों या घटनाओं पर अपनी लिखित अभिव्यक्ति देने में सक्षम हुए।

आइए हम सब सोचें :

- ⇨ यात्रा के बहाने बच्चों ने कैसे अपनी प्राकृतिक आपदा से पीड़ित लोगों के परिवेशों का व्यावहारिक ज्ञान पाया ?
- ⇨ आँखों-देखी बातों या घटनाओं पर वे कैसे अपनी अभिव्यक्ति दे सकते हैं ?
- ⇨ अपने आस-पास के वातावरण से साझा होकर देखी गयी अभिव्यक्ति, चाहे वह लिखित हो या मौखिक रूप में किस दे सकते हैं ?
- ⇨ व्यावहारिक ज्ञान से साझा होकर पूर्ण लिखित अभिव्यक्ति क्या सामर्थ्य कैसे प्राप्त की जा सकती हैं ?

क्रिया-कलाप-5

कक्षा में अध्यापक बाढ़ के संबंध में अपने विद्यार्थियों को पूर्णत: स्पष्टता से जानकारी देने के बाद उनसे इस पर अभिव्यक्ति का अभ्यास करायेंगे।

- ⇨ अध्यापक बाढ़, बाढ़ की समस्या, इसके परिणाम, आदि पर विद्यार्थियों से मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति हेतु अभ्यास करायेंगे।
- ⇨ बाढ़ की तरह अन्य प्राकृतिक आपदाएँ, जैसे भू-स्खलन, सुनामी, अकाल आदि के सम्बंध में उन्हें लिखित सामग्री के संग्रह के लिए कहेंगे। और उसे अध्यापक देखेंगे।
- ⇨ प्राकृतिक आपदा से प्रभावित क्षेत्रों में विद्यार्थियों को ले जाकर, उन्हें आँखों देखा ज्ञान दिलाने की

चेष्टा करेंगे।

⇨ विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं पर आशुभाषण की प्रतियोगिताओं का आयोजन करेंगे, ताकि विद्यार्थी किसी भी विषय पर मौखिक अभिव्यक्ति देने में सक्षम हों।

क्रिया-कलाप-6

(शिकायती या आवेदन पत्र लेखन)

आपनी कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा प्राकृतिक आपदाओं की स्थिति के संबंध में काफी जानकारी प्राप्त करने के उपरांत उन समस्याओं के निराकरण या उन पर प्रशासन की सहायता हेतु अध्यापक शिकायती या आवेदन पत्र का विद्यार्थियों से अभ्यास करायेंगे।

⇨ पहले विद्यार्थियों से अपने क्षेत्र या निकट के क्षेत्रों में बाढ़ से हुई समस्याओं पर सही टिप्पणी प्रस्तुत करायेंगे।

⇨ विद्यार्थी बाढ़ से उत्पन्न हुई, आवास, वस्त्र, बीमारी, अनामय इत्यादि समस्याओं के बारे में स्पष्टता से लिखेंगे। इसे अध्यापक देखेंगे। गलतियों को सुधारेंगे।

⇨ उन्हीं की टिप्पणियों को देखकर-जांचकर उनमें से उत्कृष्ट एक-दो टिप्पणियाँ लेकर अध्यापक उसे पत्र के रूप में प्रस्तुत करेंगे।

⇨ विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत उस टिप्पणी को श्याम-पट्ट पर पत्र के रूप में कैसे प्रस्तुत किया जा सकता है अध्यापक वैसा ही करेंगे।

⇨ जब विद्यार्थी इसको भली-भाँति समझेंगे तब इस तरह पुन: विद्यार्थियों से इसका अभ्यास करायेंगे। इस तरह से अपनी आँखों-देखी घटनाओं- समस्याओं के सम्बंध में उपयुक्त प्राथिकारी को पत्र लिखने की भी सामर्थ्य प्राप्त करेंगे।

सारांश : साधारणतया और सामान्यतया कक्षा आठवीं के विद्यार्थीयों हिन्दी में सामान्य लेखन या पत्र-लेखन सम्बंधी सामान्य कौशल विगत कक्षा में ही सीखते हैं या ऐसा ज्ञान प्राप्त करते हैं। विशेष कर प्रस्तुत इस संसाधन-इकाई के द्वारा विद्यार्थी (कक्षा आठवीं के) अपनों आँखों-देखने परिवेशों, समस्याओं-घटनाओं पर अधिक स्पष्टता से मौखिक और लिखित दोनों रीपों में सीख पायेंगे। ऐसी समस्याओं के समाधान तथा ऐसे में लोगों की सहायता के लिए प्रशासन, या अन्य आधिकारिक पक्ष के नाम पर शिकायती, आवेदन आदि पत्र लिखना भी सीख पायेंगे- प्रस्तुत संसाधन इकाई के द्वारा।

सुदढ़ीकरण :

अध्यापक विद्यार्थियों को किसी भी प्राकृतिक आपदा, घटना आदि का नाम, विषय देंगे। विद्यार्थी उसपर टिप्पणी या पत्र की प्रस्तुति का अभ्यास करेंगे।

विस्तारित गतिविधियाँ :

विद्यार्थी टी.वी. समाचार-पत्र, या अन्य किसी घरेलू सहायता से प्राकृतिक अपदाओं से सम्बंधित

तथ्यों का संग्रह करेंगे और अध्यापक को दिखायेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ-सूची :

⇨ Nas Metarials

⇨ E. Pathsala Matarials

⇨ Tess India Metarials

⇨ www.ncert.nic.in

⇨ Learning Out comes at the Elementary Stage by SCERT, Assam.

प्रश्न-भण्डार:

क) अपने क्षेत्र की समस्याओं में से किसी एक प्रधान समस्या के समाधान हेतु संबंधित अधिकारी को एक शिकायती पत्र लिखिए।

ख) प्राकृतिक आपदाओं के समय लोगों को किस तरह की समस्याओं का सामना करता है इस पर विस्तृत टिप्पणी प्रस्तुत कीजिए।

ग) क्या आप स्वयं प्राकृतिक आपदा काल में लोगों की मदद करना चाहेंगे ? अगर चाहेंगे तो कैसे करेंगे ? आपकी क्या भूमिका होगी। स्पष्ट कीजिए।

प्रस्तुतकर्ता- डॉ. अंजलि काकति
वरिष्ठ व्याख्याता,
हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
उत्तर गुवाहाटी
शुवला दत्त शइकीया
उपनिदेशक,
एस. सी. ई. आर. टी. असम

मुक्त शैक्षिक संसाधन (हिन्दी)

अधिगम के परिणाम की प्राप्ति हेतु अपनायी जानेवाली शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया

कक्षा- सातवी,आठवी

अधिगम के परिणाम	सामग्री	शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ	प्रश्नावली	मूल्यांकन
क) कविता, गीत, कहानी और निबंध/ लेख के श्रवण, पठन का सम्यक ज्ञान प्राप्त होगा।	कम्पयूटर, इंटरनेट आदि से संग्रहित और टेप-रिकार्डार की ऑडियो -विडियो क्लिप, फुटेज आदि	निरीक्षण एवं क्रिया-कलाप आधारित।	(i) नैतिकता की सीख देनेवाली एक कहानी को संक्षेप में सुनाओ। स्वाधीनता संग्राम में पूर्वोत्तर की वीरांगनाएँ। (ii) पठित लेख का सस्वर पठन प्रस्तुत करों, आदि।	सतत
ख) हिन्दी में कहानी, निबंध/लेख, डायरी आदि कैसे लिखा जाए उसकी जान-कारी प्राप्त होगी।	प्रतिष्ठित लेखकों की कहानी, निबंध, डायरी आदि के नमूने।	क्रिया-कलाप आधारित।	(i) अपनी प्रांत के वीरांगनाओं के बारे में एक एक लेख तैयार करो।	मूल्यांकन
ग) हिन्दी व्याकरण की सामान्य जानकारी के अंतर्गत विशेषणों का प्रयोग रचना के आधार पर वाक्यों के प्रकार और शुद्ध वाक्य के प्रयोग संबंधी ज्ञान मिलेगा।	विशेषणों के विविध भेद, वाक्यों में ने परसर्ग का प्रयोग कब और कहाँ होते है ? इसके बारें में ज्ञान देना।	क्रिया-कलाप आधारित।	(i) विशेषण के भेदों को उदाहरण स्पष्ट करो। (ii) ने परसर्ग को प्रयोग करके तीन वाक्य लिखो।	और सावधिक
घ) सम्बद्ध पाठों के आधार पर विद्यार्थियों को अपने देश के लिये देश प्रेम का भाव जाजाना।	भारतवर्ष का मानचित्र, स्वतंत्रता दिवस से संबंधित चित्र।	निरीक्षण एवं क्रिया-कलाप आधारित	(i) पूर्वोत्तर की वीरांगनाएँ स्वाधीनता संग्राम में किस प्रकार सहयोग की थी। (ii) देश प्रेम की भावना हमारे मन में होना चाहिए इस पर एक अनुच्छेद लिखो।	मूल्यांकन

मुक्त शैक्षिक संसाधन (हिन्दी)

अधिगम के परिणाम की प्राप्ति हेतु अपनायी जानेवाली शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया

कक्षा- सातवी

अधिगम के परिणाम	सामग्री	शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ	प्रश्नावली	मूल्यांकन
क) कहानी और निबंध/ लेख के श्रवण, पठन का सम्यक ज्ञान प्राप्त होगा।	कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि से संग्रहित और टेप-रिकार्डार की ऑडियो -विडियो क्लिप, फुटेज आदि	निरीक्षण एवं क्रिया-कलाप आधारित।	(i) भगतिन मौसी कविता का सस्वर पाठ करो।	सतत
ख) हिन्दी में कविता/ गीत, कहानी, निबंध/ लेख, पत्र आदि कैसे लिखा जाये उसकी जानकारी प्राप्त होगी।	विद्यार्थियों के उपयोगी कविता/गीत, कहानी संकलन, पोस्टकार्ड, भिन्न पत्रों के नमूने आदि सामग्रियाँ।	क्रिया-कलाप आधारित।	(i) बिल्ली और बन्दर की चतुराई के बारे में मजेदार कहानी लिखो। (ii) धरती, आसमान, नदी, फूल जैसे विषय पर एक छोटीसी कविता लिखो, आदि।	मूल्यांकन
ग) हिन्दी व्याकरण की सामान्य जानकारी के अंतर्गत संज्ञा, क्रिया काल का प्रयोग, समानार्थी एवं विलोमार्थक शब्द आदि का सामान्य ज्ञान मिलेगा।	विशेषण संज्ञा शब्द, क्रिया का काल, समानार्थी शब्द और विलोमार्थक शब्दों की अलग-अलग सूचियाँ।	क्रिया-कलाप आधारित।	(i) निम्नलिखित शब्दों के एक-एक समानार्थी शब्द लिखो- माँ, विद्यालय, पत्नी, आसमान (ii) निम्नलिखित शब्दों के विलोमार्थक शब्द लिखो- दिन, सफेद, धनी, शिक्षक	और सावधिक
घ) संबंध पाठों के आधार पर विद्यार्थी को दूसरों को ठगना कितनी बुरी बात है- इसका शिक्षा मिलेगी।	कविता से संबंधित बिल्ली और बंदर का चित्र आदि।	निरीक्षण एवं क्रिया-कलाप आधारित	कविता से ज्ञान लेकर दूसरे कविता को लिखना।	मूल्यांकन

मुक्त शैक्षिक संसाधन (हिन्दी)

अधिगम के परिणाम की प्राप्ति हेतु अपनायी जानेवाली शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया

कक्षा- आठवी

अधिगम के परिणाम	सामग्री	शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ	प्रश्नावली	मूल्यांकन
क) कविता, गीत, पद के श्रवण, पठन का सम्यक ज्ञान प्राप्त होगा।	कम्पयूटर, इंटरनेट आदि से संग्रहित और टेप-रिकार्डार की ऑडियो -विडियो क्लिप, फुटेज आदि	निरीक्षण एवं क्रिया-कलाप आधारित।	(i) गोकुल लीला कविता का सस्वर पठन प्रस्तुत करों,	सतत
ख) हिन्दी में कविता, गीत, पद आदि कैसे लिखा जाए उसकी जान-कारी प्राप्त होगी।	विद्यार्थियों के उपयोगी कविता गीत आदि के नमुने आदि सामग्रियों।	क्रिया-कलाप आधारित।	(i) अपनी पसंद के अनुसार एक हिन्दी कविता लिखए।	मूल्यांकन
ग) हिन्दी व्याकरण की सामान्य जानकारी के अंतर्गत समानार्थी शब्द और शब्द युग्मों का प्रयोग संबंधी ज्ञान मिलेगा।	समानार्थी शब्द और शब्द युग्मों की अलग-अलग सूचियाँ।	क्रिया-कलाप आधारित।	(i) समानार्थी शब्द और शब्द युग्मों के प्रयोग के पाचँ पाचँ सूची प्रस्तुत करो।	और
घ) संबंध पाठों का आधार पर असमीया संस्कृती के बारे में जानकारी प्राप्त होगी।	पाठ से संबंधित बाल कृष्ण का चित्र	निरीक्षण एवं क्रिया-कलाप आधारित	(i) बरगीत किस प्रकार के गीत हैं ? इसकी रचना किसने की थी ? लिखिओए। (ii) माधव देव के बारे में एक लेख लिखिये।	सावधिक मूल्यांकन

मुक्त शैक्षिक संसाधन (हिन्दी)

अधिगम के परिणाम की प्राप्ति हेतु अपनायी जानेवाली शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया

कक्षा-आठवी

अधिगम के परिणाम	सामग्री	शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ	प्रश्नावली	मूल्यांकन
क) कहानी और निबंध/ लेख के श्रवण, पठन का सम्यक ज्ञान प्राप्त होगा।	कम्पयूटर, इंटरनेट आदि से संग्रहित और टेप-रिकार्डार की ऑडियो -विडियो क्लिप, फुटेज आदि	निरीक्षण एवं क्रिया-कलाप आधारित।	(i) बाढ़ का मुकावाला कपाठ को सस्वर पाठ करो।	सतत मूल्यांकन और सावधिक मूल्यांकन
ख) हिन्दी में कहानी, निबंध/लेख, डायरी आदि कैसे लिखा जाए उसकी जान-कारी प्राप्त होगी।	विद्यार्थियों के उपयोगी कहानी-संकलन, पोष्टकार्ड, भिन्न पत्रों के नमूने आदि सामग्रियाँ।	क्रिया-कलाप आधारित।	(i) अपनी जन्म दिवस पर आमन्त्रित करते हुए अपने मामा को एक पत्र लिखो। (ii) अपने क्षेत्र की समस्याओं के समाधान हेतु संबंधित अधिकारी को एक शिकायती पत्र लिखिये।	
ग) हिन्दी में आवेदन पत्र, शिकायती पत्र कैसे लिखी जाय इसका व्यावहारिक ज्ञान मिलेगा।	विद्यार्थी पत्र लेखन के जरिए अपनी अभिव्यक्ति की सक्षमता प्राप्त करेंगे।	क्रिया-कलाप आधारित।	(i) शिकायती पत्र, आवेदन पत्र, पारिवारीक पत्र आदि के बारे में ज्ञान देना।	
घ) सम्बद्ध पाठों के आधार पर विद्यार्थी को अपने क्षेत्र में पीड़ित समस्याओं और समाधान पर ध्यान आकृष्ट करना।	पाठ से संबंधित बाढ़ से पीड़ित अनेक चित्र।	निरीक्षण एवं क्रिया-कलाप आधारित	(i) प्राकृतिक आपदाओं के समय लोगों को किस तरह समस्याओं को समना करना हैं इस पर एक विस्तृत टिप्पण प्रस्तुत कीजिए।	